18 OCT 3 2026.qxd 17-10-2026 22:54 Page 1

दुर्गा पण्डालोंमें सप्तमी पूजाकर मांको अर्पित की पुष्पांजलि

बारवारियोंने किया चंडी पाठ, मांको लगाया खिचड़ीका भोग

शहर के दर्जनभर पूजा पंडालों में बारवारियों की ओर से दुर्गा पूजा महोत्सव के दूसरे दिन सप्तमी पर दुर्गा पण्डालों में सप्तमी की पूजा की गयी। इस दौरान पुष्पाजंलि का कार्यक्रम हुआ। जिसके बाद चंडी पाठ एवं मां को खिचड़ी का भोग लगाकर श्रद्धालुओं में प्रसाद के रूप में बांटा गया। वहीं मां का अद्भुत श्रृंगार देखने के लिए देर रात तक दुर्गा पूाज पण्डालों में भीड़ उमड़ी रही।

कर्नलगंज, टैगोर टाउन, दरभंगा, अशोक नगर, बाई का बाग, नेतानगर, कटघर, एलनगंज एवं शास्त्रीनगर सहित अन्य पंडालों में मां दुर्गा का जागृत किया गया। षष्ठी तिथि पर शुक्रवार को मां भगवती का आह्वान, अधिवास (घट स्थापना) एवं मां की भुजाओं में शंख, गदा, तलवार, चक्र एवं त्रिशूल और आभूषण पहनाये गये। सप्तमी पर पण्डालों में विधि-विधान से सप्तमी की पूजा की गयी। जिसके बाद पुष्पाजंलि, चंडी पाठ किया गया। दोपहर में खिचड़ी का भोग लगा, जिसे पण्डाल में मौजूद सभी लोगों में वितरित किया गया। जिसके बाद संध्या आरती और फिर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। करेली जीटीबी नगर सार्वजनिक दुर्गा पूजा समिति की ओर से महासप्तमी पर मां दुर्गा की विशेष पूजा और पुष्पांजलि का आयोजन हुआ। सुबह साढ़े सात बजे वैदिक मंत्रोच्चार के साथ सप्तमी पूजा शुरू हुई, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने पुष्पांजलि दी। सुबह दस बजे प्रसाद वितरण किया गया। शाम साज बजे संध्या आरती और फिर मधुर भजनों की प्रस्तुति दी गयी। अध्यक्ष प्रदीप दत्ता ने बताया कि इस बार की थीम 'विरासत से वर्तमान तक संस्कृति की अनमोल यात्रा' रखी गई है। उन्होंने कहा कि नंदी की पावन कथा, हमारी सनातन आस्था की गाथा है। पुरानी वस्तुओं में छिपी है हमारी सभ्यता की पहचान। बीते युग की स्मृतियों से अपनी जड़ों का सम्मान करना है। हमारा उद्देश्य यु-वा पीढ़ी को अपनी संस्कृति और परंपराओं से जोड़ना है। अपनी वि-रासत जानें, अपनी संस्कृति पहचानें और भविष्य संवारें।



दरभंगा बारवारी पूजा पण्डालमें मां दुर्गाका भव्य श्रृंगार।

मांके महागौरी स्वरूपका दर्शन-पूजन आज



मां दुर्गा के आठवीं स्वरुप का नाम महागौरी है। दुर्गा पूजा के आठवें दिन महागौरी की उपासना का विधान है। इनकी उपासना से भक्तों पूर्वसंचित पाप भी विनष्ट हो जाते है। नवरात्र मे दुर्गा पूजा के अवसर पर बहुत ही विधि-विधान से माता दुर्गा के नौ रूपों की पूजा-उपासना की जाती है। महागौरी का पूजन-अर्चन, उपसाना आराधना कल्याणकारी है। इनकी कृपा से अलौकिक सिद्धियां भी प्राप्त होती है। नवरात्र में आठवें दिन महागौरी शक्ति की पूजा की जाती है। नवरात्र में आठवें दिन महागौरी शक्ति की पूजा की जाती है। नाम से प्रकट है कि इनका रूप पूर्णतः गौर वर्ण हैं। इनकी उपमा शंख, चंद और कुंद के फल से दी गयी है। अष्टवर्षा भवेद् इस्प गौरी वर्ण है। इनकी आयु आठ साल की मानी गयी है। इनके सभी आभूषण गिर और वस्त्र सफेद है। इसीलिए उन्हें श्वेताम्बरधरा कहा गया है। चार भुजाएं निवा और वाहन वृषभ है। इसीलिए इनकों वृषारूढ़ा भी कहा गया है। इनके ऊपर पता वाला दाहि-ना हाथ अभय मुद्रा है तथा नीचे हाथ में त्रिशूल धारण किया जिल् हुआ है। ऊपर वाले बाएं हाथ में डमरु धारण की हैं और नीचे वाले वाले जैसी हाथ में वर मुद्रा है। उत्तकी पूरी मुद्रा बहुत शांत है। पति के रूप में शिव को प्राप्त करने के लिए गौरी ने कठोर तपस्या की थी। उनका रूप गौर वर्ण का हो गया इसलिए यह महागौरी कहलायी।

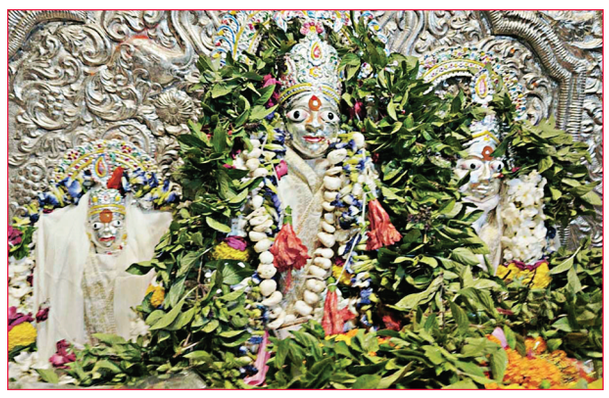
देवी मंदिरोंमें मांको चढ़ाये नारियल एवं चुनरी, जयकारोंसे गूंजा परिसर

शारदीय नवरात्र : देवी मंदिरोंमें पुष्पसे किया मांका श्रृंगार दर्शन

शारदीय नवरात्र की सप्तमी पर देवी मंदिरों में भक्तों ने मां के कालरत्रि स्वरूप का पूजन अर्चन किया। इस दौरान अलोपशंकरी, मां कल्याणी देवी एवं मां ललिता देवी, मां खेमा माई सहित सभी देवी मंदिरों में मां के भव्य श्रृंगार दर्शन के लिए श्रद्धालु देर रात तक परिसर में डटे रहे। सुबह से दोपहर तक मां का पूजन करने के लिए श्रद्धालु थाल सजाकर लाइन में लगकर अपनी बारी का इंतजार करते दिखे।

मां अलोप शंकरी मंदिर में सुबह से ही श्रद्धालुओं की भीड़ जुटने लगी। भक्तों ने लाल चुनरी, नारियल और फूल चढ़ाकर परिवार की खुशहाली की प्रार्थना की। मां-दिर परिसर में दिनभर भक्ति का माहौल बना रहा। इस मौके पर बच्चों का मुंडन संस्कार भी कराया गया। मां कल्याणी देवी जी के धाम अतरसुइया में मां कल्याणी का कालरात्रि स्वरूप के दर्शन के लिए भक्तों की भीड़ पूरे दिन अनवरत लगी रही।

मां के श्रृंगार का दर्शन छह बजे से रात्रि साढ़े १२ बजे तकभक्तों ने प्राप्त किया। शाम सात बजे महाआरती एवं रात्रि एक बजे शयन आरती पं. सुशील पाठक ने उतारी। उन्होंने बताया कि माता कालरात्रि नकारात्मक आसुरी शक्तियों का नाश करती है इसलिए जो भक्तगण इनकी आराधना करता है तो उसकी नकारात्मक शक्तियां नष्ट हो जाती है। सुबह मंगला आरती पं. श्याम जी पाठक ने किया। मध्याह्न में मां कल्याणी जी का महाभिषेक एवं भोग अर्पित किया गया। दूर दराज एवं नगर के भक्तों ने शतचण्डी महायज्ञ में भाग लेकर हवन पूजन किया। मेले की व्यवस्था में मीडिया प्रभारी राजेश केसर-वानी आचार्य संतोषानंद महाराज, अनिल पाठक, सुधीर पाठक, कृष्ण कुमार पाठक, महेंद्र तिवारी आदि लगे रहें। इसी क्रम में मीरापुर स्थित प्राचीन राजराजेश्वरी त्रिपुर सुंदरी सिद्धपीठ मां ललिता देवी मंदिर में माता के कालरात्रि स्वरूप का अलौकिक श्रृंगार किया गया।



मां का दरबार गुड़हल और गुलाब के फूलों तथा सैकड़ों मिट्टी के देशी घी के दीयों से सजाया गया, जिससे पूरा मां-दिर परिसर दिव्य रोशनी से जगमगा उठा। ब्रह्म मुहूर्त में मंगला आरती के साथ दिन का शुभारंभ हुआ। सुबह से ही नारियल-चुनरी चढ़ाने के लिए श्रद्धालुओं की लंबी कतार लगी रही। कई परिवारों ने इस पावन अवसर पर अपने बच्चों के मुंडन और कर्णछेदन संस्कार भी संपन्न कराये। मंदिर समिति के अध्यक्ष हरिमोहन वर्मा और महामंत्री प्रदीप जायसवाल ने बताया कि प्रातः ११ विद्वान ब्राह्मणों ने दुर्गा सप्तशती का सस्वर पाठ किया। रात्रि में सत्य चंडी महापाठ हुआ। पाठ का नेतृत्व आचार्य पं. शिव मूरत मिश्रा ने किया और मुख्य यजमान संजीव अग्रवाल रहे। मध्य रात्रि १२ बजे शयन आरती की गयी। मीडिया प्रभारी सुमित श्रीवास्तव ने बताया कि कल महाअष्टमी पर माँ ललिता देवी का महागौरी स्वरूप में विशेष श्रृंगार होगा। इस मौके पर महेन्द्र मालवीय, उमेश मिश्रा, गिरिशंकर प्रभाकर, संजय उपाध्याय, प्रमोद अरोरा, दिलीप केशरी, अनूप केशरवानी, हरीश खरे, कमलेश, अंकित, बृजमोहन शुक्ला व्यवस्था संभालने में लगे रहे।





सूर्पणखाने रामको दंडित करनेके लिए रावणको दिखायी अपनी दुर्दशा

कटरामें अशोक वाटिकाके विध्वंससे लंका दहन तक हनुमानके पराक्रमने किया रोमांचित

'कथा रामराज की' के तहत शनिवार शाम हुई रामलीला में खर दूषण वध के बाद सूर्पणखा रावण दरबार में पहुंची और अपनी दुर्दशा दिखला कर रावण को राम को दंड देने के लिये प्रेरित करती है। राम की शक्ति का अहसास होने के बाद रावण मारीच के पास जाकर उससे मृग के वेश में राम के आश्रम में जाकर उन्हें आश्रम से दूर ले जाने की सलाह देता है। मारीच स्वर्ण मृग बनकर पर्णकुटी पहुंचता है। मृग के स्वर्णिम चर्म को देख, राम से अपने लिये उस मृग को लाने का निवेदन करती हैं, मृग नजदीक-दूर करके दौड़ते राम को कुटिया से बहुत दूर ले जाता है। कुटी में हा सीता-हा लक्ष्मण की कम्पित कर देने वाली आवाज सुनाई देती है। उनको लगता है राम संकट में है। लक्ष्मण समझाते हैं, राम पर कोई संकट आ ही नहीं सकता। सीता के हठ किये जाने पर लक्ष्मण उधर ही भागते हैं। जाते समय वें कुटी के आगे एक रेखा खींच जाते हैं, सीता से उस रेखा को ने लांघने का अनुरोध कर जाते हैं। भिक्षा मांगने के नाम पर रावण पहुंचता है और सीता को रथ पर बिठा लेता है। इसके बाद गिद्धराज जटायु रावण से सीता को छुड़ाने का प्रयास, एक पंख कटाने, राम का शबरी से मिलन, वानर राज सुग्रीव से मित्रता, फिर हनुमान मिलन, बालि युद्ध और राम द्वारा पवनपुत्र हनुमान को सीता को दिखाने के लिए अंगूठी के देने का मंचन किया जाता है। इसी क्रम में श्री कटरा रामलीला कमेटी की ओर से श्री कटरा रामलीला कमेटी की ओर से १२ दिवसीय भव्य रामलीला प्रस्तुति 'गाथा राम की' के आठवें दिवस पर 'दूत से विनाशक तक' में हनुमान के अदम्य साहस, बुद्धिमत्ता और पराक्रम का ऐसा प्रभावशाली मंचन हुआ कि दर्शक रोमांचित होकर बार-बार तालियाँ बजाने लगे। अशोक वाटिका के विध्वंस, अक्षय कुमार वध, हनु-मान-रावण संवाद और स्वर्णिम लंका के दहन ने पूरे वातावरण को उत्साह, ऊर्जा से भर दिया।

अतुल यदुवंशी के निर्देशन में हुई रामलीला के मंचन में अशोक वाटिका में हनुमान के प्रवेश से आरंभ हुआ। घटनाक्रम देखते ही देखते प्रचंड संघर्ष में बदल गया। वाटिका के विध्वंस और रावण के पुत्र अक्षय कुमार के वध का मंचन प्रभावशाली अभिनय, सटीक दृश्य-संयोजन और प्रकाश-ध्वनि के सधे हुए प्रयोग के साथ प्रस्तुत किया गया। हनुमान के पराक्रम का विस्तार जिस तरह मंच पर उभरा, उसने दर्शकों को कथा के भीतर खींच लिया और सभागार तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। दृश्य की नाटकीय लय, कलाकारों की देहभाषा, मंच पर उनकी उपस्थिति और प्रकाश-ध्वनि के संयोजन ने दर्शकों की उत्सुकता लगातार बनाए रखी।इसके बाद स्वर्णिम लंका को अग्नि के हवाले करने का दृश्य प्रस्-तुति का चरम आकर्षण बन गया। तीन मंचों की सुविचारित संरचना, विशालकाय दृश्य-रचना, गतिशील दृश्य-परिवर्तन तथा प्रकाश और ध्वनि के प्रभावी तालमेल ने लंका-दहन को एक भव्य रंगमंचीय अनुभव में बदल दिया। सीता माता से पुनः भेंट, उनका आशीर्वाद और प्रभु श्रीराम के लिए चूड़ामणि प्राप्त करने का प्रसंग भावनात्मक संवेदना के साथ प्रस्तुत हुआ। मंचन से पूर्व मुख्य अतिथि महापौर, पूर्व मंत्री डा. रंजना बाजपेई एवं अध्यक्ष सुधीर गुप्ता कक्कू, महामंत्री उमेश केसरवानी, कोषाध्यक्ष अश्वनी केसरवानी, उपाध्यक्ष विनोद केसरवानी, आनन्द अग्रवाल, मयंक अग्रवाल, मंत्री शिव बाबू गुप्ता, महेश चन्द्र गुप्ता, विपुल मित्तल, कार्यकारणी सदस्य दिलीप चौरसिया, मीडिया प्रभारी डा. पवन प्रजापति, आलोक गुप्ता ने रामयण जी की आरती की।

अब जागो हे अंजनी कुमार, लंकाकी ओर प्रयान करो...

पजावाकी रामलीलामें सुग्रीव मित्रता एवं बाली-सुग्रीवके युद्धने भरा रोमांच

श्री महंत बाबा हाथी राम पजावा रामलीला कमेटी की ओर से अतरसुइया स्थित रामलीला मैदान में शनिवार को सचिन कुमार गुप्ता के निर्देशन में हुई रामलीला के मंचन में मनमोहक प्रस्तुति प्रभु श्री राम एवं लक्ष्मण का हनुमान जी से मिलन, सुग्रीव मित्रता एवं बाली सुग्रीव का भीषण युद्ध जिसमें विशेष रूप से दो गादाओं के लड़ने से चिंगारी निकलने का दृश्य को अद्भुत तरीके से प्रस्तुत किया गया। हनुमान द्वारा आकाश मार्ग से उड़ना एवं लंका जाकर सीता की खोज कर बहुत ही रोमांचित रहा। हनुमान द्वारा अशोक वाटिका में प्रवेश कर सुनो... सुनो... हे राम कहानी के संगीत पर लोगों ने जय श्री राम के नारे लगाए तत्पश्चात हनुमान का मेघनाथ द्वारा बंदी होना एवं हनुमान रावण संवाद का दृश्य बहुत ही कुशलतापूर्वक कलाकारों ने निभाया लंका दहन मे वास्तविक अग्नि का लाइट एवं साउंड के इफेक्ट से बहुत ही सुंदर तरीके से प्रस्तुत किया गया, जो की कल्पना की दृष्टि से भी बेजोड़ था। रामलीला शुरू होने से पूर्व प्रभु श्री राम का आगमन हुआ। इसके बाद प्रभु श्री राम-लक्ष्मण एवं माता जानकी की आरती डा. सुबोध जैन एवं डा. उदय प्रताप सिंह ने किया। उसके बाद आयोजित प्रतियोगिता जिसमें यूनाइटेड इंस्टिट्यूट की प्रो. शिवानी गुप्ता ने बच्चों से श्री राम पर आधारित प्रश्न पूछे और सही जवाब देने वालों को पुरस्कृत किया गया। इस मौके पर कमेटी मोहन जी टंडन (टंडन भैया), अमिताभ टंडन, राजेश मल्होत्रा, रवि ओझा, रामजी केसरवानी, गिरी शंकर प्रभाकर, रोहन पांडे, सागर पांडे, रवि गुप्ता आदि मौजूद रहे।

अंगद-रावण संवाद एवं लंका दहनका रोमांचित मंचन

सिविल लाइंसकी रामलीलामें हनुमानने उजाड़ दी अशोक वाटिका

श्री श्री बाल रामलीला समिति सिविल लाइंस प्रयागराज में शनिवार को भगवान श्रीराम ने युद्ध से ठीक पहले अंतिम प्रयास के रूप में बाली पुत्र अंगद को शांति दूत बनाकर रावण की सभा में भेजा। रावण ने अंगद का अनादर करते हुए उन्हें छोटा और वानर कहकर अपमानित करने की कोशिश की।?

अंगद ने रावण के अभिमान को तोड़ते हुए भगवान परशुराम और सहस्त्रबाहु का प्रसंग याद दिलाया और रावण को उसकी औकात एवं धर्म का बोध कराया। जब रावण ने अंगद को ललकारा, तब अंगद ने सभा के बीचों-बीच अपना पैर जमा दिया और रावण तथा उसकी सभा के किसी भी योद्धा को उसे हिलाने की चुनौती दी। रावण के बड़े-बड़े योद्धा और मंत्री भी अंगद का पैर नहीं हिला सके, जि-ससे रावण की सभा में सन्नाटा छा गया। अंगद ने रावण को समझाया कि वह माता सीता को सम्मान सहित श्रीराम को सौंप दे, अन्यथा उसकी पूरी लंका का विनाश तय है। भगवान श्रीराम के दूत के रूप में हनुमान जी समुद्र पार कर लंका पहुंचते हैं और अशोक वाटिका में माता सीता से भेंट कर उन्हें श्रीराम की मुद्रिका (अंगूठी) और संदेश देते हैं। माता सीता से आज्ञा लेकर हनुमान जी अशोक वाटिका उजाड़ते हैं और रावण के पुत्र अक्षय कुमार सहित कई राक्षसों का वध करते हैं। रावण के आदेश पर हनुमान जी की पूंछ में कपड़ा लपेटकर आग लगाई जाती है, जिसके बाद हनुमान जी अपनी जलती हुई पूंछ से पूरी स्वर्ण लंका को जलाकर भस्म कर देते हैं। इस मंचन के दौरान 'जय श्रीराम' के जयका लगने लगे।

पुत्र वियोगमें दशरथके प्राण पखेरू उड़े, अयोध्यामें छाया मातम

अल्लापुरकी रामलीलामें दशरथ मृत्युका मार्मिक मंचन

श्री बाघंबरी क्षेत्र अल्लापुर कमेटी की ओर से शनिवार शाम रामलीला की शुरुआत पूर्व डीजीसी फौजदारी गुलाब चंद्र अग्रहरि ने भगवान कर पूजन कर की। रामलीला के मंचन में राम वन गमन के वियोग में राजा दशरथ विलाप करते हैं और स्मरण करते हुए कहते हैं 'याद आया मुझे वो पाप अपना, जो किया था अनजाने में। श्राप दिया अंधे माता पिता ने, तड़पोगे तुम भी पुत्र वियोग में, और हा राम- हा लक्ष्मण, हा जानकी कहते हुए जमीन पर गिर पड़ते हैं और प्राण पखेरू उड़ जाते हैं।, अयोध्या में मातम छा जाता है। भरत-शत्रुघ्न को ननिहाल में सूचना दी जाती है, वह अयोध्या आते हैं। माता कैकेयी को अपशकुन कहते हैं। पिता की अंत्येष्टि करते हैं और श्रीराम को लाने गुरुओं प्रजा के साथ चित्रकूट प्रस्थान करते हैं। श्रीराम से प्रार्थना करते हैं कि वह अयोध्या लौट चलें किन्तु श्रीराम के द्वारा पिता के आदेश पालन पर अडिग रहने पर उनकी चरण पादुका मांग लेते हैं और सिर पर रखकर अयोध्या वापस आते हैं और राजगद्दी पर खड़ाऊँ रखते हैं। इधर अगस्त्य मुनि चित्रकूट आते हैं और राम लक्ष्मण को दिव्यास्त्र प्रदान करते हैं।

इस मौके पर श्रीशंकर द्विवेदी, शशि शेखर तिवारी, आचार्य राजेश त्रिपाठी, कमलेश दुबे, आचार्य शिवम पांडेय, चंदन भट्ट, अनिल त्रिवेदी, मुकेश उपाध्याय, अवधेश पाठक, रमेश यादव (राजू), वीरेंद्र तिवारी, सतीश गुप्ता, अमित त्रिपाठी आदि मौजूद रहे।

राम जी के रूप में शिवा कुमार, भरत के रूप में नीरज अग्रवाल, लक्ष्मण के रूप में दीपेंद्र सिंह, शत्रुघ्न का रूप में प्रवीण पांडे, सी-ताजी के रूप में सृष्टि जाना, राजा दशरथ के रूप में धनंजय तिवारी, कैकेयी प्रिया मिश्रा रहीं।

आजाद पार्कमें किया गया सम्पूर्ण रामलीलाका मंचन

स्पर्श फिजिकल आर्ट एण्ड कल्चर संस्था द्वारा ज्ञान चन्द्रवंशी और उनकी पूरी टीम द्वारा शनिवार को चन्द्रशेखर आजाद पार्क स्थित आजाद मंच पर सम्पूर्ण रामलीला 'द वार आफ रामायना' का मंचन किया गया। मुख्य अतिथि जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा ने दीप जलाकर कार्यक्रम की शुरुआत की। डीएम ने कहा कि यह केवल नाटक नहीं बल्कि हमारी संस्कृति और संस्कारों की जीवंत पाठशाला है। इस नाटक में नौ दिनों तक चलने वाली सम्पूर्ण रामलीला को महज २.५० घण्टे में प्रस्तुत किया गया।



कथा की शुरुआत राम जन्म से होती है। इसके बाद गुरुकुल शिक्षा, सीता स्वयंवर, राजा दशरथ द्वारा कैकेयी को वरदान, राम को १४ वर्ष का वनवास, सूर्पणखा प्रसंग, सीता हरण, हनुमान द्वारा सीता की खोज एवं लंका दहन, समुद्र पर वानर सेना द्वारा सेतु निर्माण और राम-रावण युद्ध के बाद अंत में अयोध्या में राम राज्याभिषेक का मंचन किया जाता है। राम की भूमिका सुवने वत्स और सीता का किरदान मधु पाण्डे ने निभाया। लक्ष्मण-लक्ष, हनुमान-शिवाकान्त, रावण-मंगला पाण्डे, दशरथ-पंकज गौड़, राजा जनक-भूपेन्द्र सिंह, सुग्रीव-सत्येन्द्र राव, बाली एवं परशुराम-किशन तिवारी, मंथरा-श्रेया, कैकेयी-नाजिया, सूर्पणखा एवं कौशल्या-तृप्ति और नृत्यांगना की भूमिका खुशी यादव ने निभायी।

